प्रकाशन तिथि : 01 नवम्बर, 2022
प्रेषण तिथि : 04 नवम्बर, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 16 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज का राजस्थान प्रवास

यथार्थ गीता के प्रणेता महापुरुष स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज लगभग 6 वर्षों के पश्चात राजस्थान पधारे एवं नागौर व बीकानेर की सीमा पर स्थित गांव श्री बालाजी में स्थित आश्रम में उनका 14 से 26 नवंबर तक प्रवास रहा। 16 नवंबर को आश्रम के धूणे में स्वामी जी के कर कमलों से त्रिशूल स्थापना का कार्यक्रम हुआ जिसमें सैंकड़ों की संख्या में भक्त उपस्थित रहे। इस अवधि में प्रतिदिन प्रातः एवं अपराह्न सत्संग का आयोजन होता रहा जिसमें राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के साथ साथ अन्य राज्यों से आये भक्तों ने भी स्वामी जी के मुखारविंद से हुई अमृत वर्षा का रसास्वादन किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

छोटे किंतु जुझारू जीवन से पीढ़ियों को प्रेरणा दी आयुवान सिंह जी ने: संघप्रमुख श्री

(श्रद्धापूर्वक मनाई द्वितीय संघप्रमुख की 102वीं जयंती)

आयुवान का अर्थ है जिसके पास लंबी आयु हो, परंतु श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील ने मात्र 47 वर्ष की आयु ही पाई। महापुरुषों की यह विशेषता होती है कि वे कम समय में ही इतना अधिक कार्य कर जाते हैं जितना सामान्य व्यक्ति बहुत लंबे समय में भी नहीं कर पाते। आयुवान सिंह जी भी ऐसे ही महापुरुष थे और उन्होंने अपने छोटे किंतु जुझारू जीवन से आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने का कार्य किया। एक निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ता, एक कुशल राजनीतिज्ञ, एक उच्च कोटि के लेखक और एक क्रांतिकारी विचारक की विविध भूमिकाओं को अपने छोटे से जीवन में सफलता पूर्वक निभाना उनकी विलक्षण प्रतिभा का प्रमाण है। स्वयंसेवक और संघप्रमुख के रूप में उनकी इस प्रतिभा का लाभ संघ को भी मिला और समाज के उच्च वर्ग को भी उन्होंने संघ से परिचित कराया।

उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने खदरपर (गुजरात) में श्रद्धेय आयुवान सिंह जी की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य को प्राप्त करने का श्रेष्ठतम मार्ग है। पूज्य तनसिंह जी, श्रद्धेय आयुवान सिंह जी, नारायण सिंह जी रेड़ा और अनेकों वरिष्ठ स्वयंसेवक इस मार्ग पर चले हैं, इसलिए यह हमारे लिए अनुभूत मार्ग है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'अपने भीतर के रावण को मारना ही सच्ची दीपावली'

आज हम दीपावली स्नेहमिलन के लिए यहां इकट्ठा हुए हैं। दीपावली कब प्रारंभ हुई? जब भगवान राम ने रावण को समाप्त किया और चौदह वर्ष के वनवास के बाद वापस लौटे, तब दीपावली प्रारंभ हुई। लेकिन हमने कौनसा रावण मारा है जो आज हम यहां दीपावली का स्नेहमिलन मना रहे हैं? रावण से मतलब किसी व्यक्ति से नहीं है, बल्कि हमारे अंदर बैठी हुई वे दुष्प्रवृत्तियां हैं जिन्होंने हमें रास्ता भटकाया है, उस रावण को मारने के लिए हमने क्या किया? अगर उसके बारे में हम कुछ करते हैं, अपने आप को निर्मल बनाने के लिए कुछ करते हैं, **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

हृदय का अंधकार है भय और भ्रम का कारण: संघप्रमुख श्री

(स्वागत उद्बोधन, मा.प्र.शि. धोलेरा)

बार-बार इसी तरह से इसी भाल पर तिलक लगाकर श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारा स्वागत करता है। हम भी बार-बार स्वागत कराने के लिए आतुर होते हैं और झुण्ड के रूप में अपने आप को यहां लाते हैं। लेकिन ऐसा हम बार-बार क्यों कर रहे हैं और श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बार-बार बुलावा क्यों देता है? क्यों बार-बार हमारा स्वागत करता है और क्यों बार-बार हमें विदाई देता है? इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। हमने जो एक थाती पाई थी, भगवान ने हमको जिस कौम में जन्म दिया, उस कौम की जो पीड़ा है, जो त्याग है, जो बलिदान है, उसको बार-बार हमें याद दिलाने की कोशिश श्री क्षत्रिय युवक संघ करता है और बार-बार उसी को याद दिलाया जाता है जो भूल जाता है। हम भी यहां आते हैं तब हमें पूर्वजों की वह थाती याद आती है, वह बलिदान और त्याग याद आता है। लेकिन जैसे ही हम यहां से जाते हैं हमारी वह ज्योति, हमारी वो पीड़ा, हमारी वो चिंगारी, उस पर एक राख आ जाती है और हम यह भूल जाते हैं कि हमने इस कौम में जन्म क्यों लिया है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बार-बार बुलाता है और याद दिलाता है और उस चिंगारी को वापिस हवा देने का प्रयास करता है। यहां आने के बाद उस चिंगारी में लपटे उठने लगती हैं और वह ज्योति हमारे भीतर पुनः जलनी प्रारंभ होती है। अभी हमने देखा, सूर्योदय की इस बेला में अंधकार को समाप्त करके प्रकाश ने प्रवेश किया। वस्तुतः अंधकार का कोई अस्तित्व नहीं है। प्रकाश की अनुपस्थिति ही अपने आप में अंधकार है और प्रकाश के उत्पन्न होते ही अंधकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। हमारे हृदयों में भी एक अंधकार छाया हुआ है और उसका कारण भी प्रकाश की अनुपस्थिति ही है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे हृदय में उस प्रकाश को जगाने का प्रयास करता है जिससे हमारे हृदय का अंधकार मिट सके। आज से 76 वर्ष पूर्व पूज्य तनसिंह जी ने इस ज्योति को जगाया और निरंतर 76 वर्ष से यह ज्योति जलती रही है। हमारे पूर्वजों ने भी इस ज्योति को जगाए रखा और हम भी इस ज्योति को जगाने का प्रयास कर रहे हैं। यह ज्योति लगातार जलती रही है और जहां निरंतरता होती है वहां चाहे कैसा भी कार्य हो वह अवश्य सफल होता है। लेकिन जहां अंतराल आ जाता है वह चाहे कितना भी श्रेष्ठ कर्म हो, वह असफल हो जाता है और वहां अंधकार छा जाता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

8 दिन में 3 मा.प्र. व 6 प्रा.प्र. शिविरों में 1100 शिविरार्थियों का प्रशिक्षण

समाज की युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण के उद्देश्य से श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन निरंतर जारी है। इसी क्रम में 15 से 22 अक्टूबर की अवधि में विभिन्न स्थानों पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के नौ प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए। इनमें तीन माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा छह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। बालोतरा संभाग के सिवाणा प्रांत में 16 से 21 अक्टूबर तक बालिकाओं का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग हाउस सिवाणा में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन रश्मि कंवर देलदरी ने किया। उन्होंने बालिकाओं को विदाई देते हुए कहा कि हमने इस संस्कार शिविर के माध्यम से संघ को नजदीक से देखा है। संघ का शिक्षण हमारे जीवन में उतर जाये जिससे समाज में एक आदर्श नारी शक्ति बने। ऐसा तभी होगा जब हमारा जीवन ही संघमय बन जाए। हम हमारे जीवन में ऐसा कोई कृत्य न करें जिससे हमारे आदर्श समाज, परिवार व संघ पर कोई उंगली उठाए। उन्होंने कहा कि आज की सामाजिक स्थिति में नारी शक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है। हमारे समाज में अनेक ऐसी वीरांगनाएं जन्मी हैं जिन्होंने भक्ति और शक्ति के क्षेत्र में अपनी सीमाएं स्थापित की हैं। उनसे प्रेरणा लेकर हमें भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। हमने छह दिनों के इस महायज्ञ में अपने श्रम, समय और साधनों की आहुति देकर जो पुण्य प्राप्त किया है, उस पुण्य रूपी प्रसाद को समाज में भी बांटे और ऐसे लगने वाले मेलो में बार-बार आती रहें। संघ हमेशा आपके स्वागत के लिए खड़ा है। शिविर में कुण्डल, पादरू, पादरड़ी, सिवाना, पिपलुन, सिणेर, जाखड़ी, बाड़मेर, कालेवा, वरिया, गुड़ानाल, भाटा, धीरा आदि गांवों से 189 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। ईश्वर सिंह पादरु, मनोहर सिंह सिणेर, वीर सिंह इंद्राणा, हनवंत सिंह मवड़ी ने व्यवस्था में सहयोग किया। जोधपुर संभाग के ओसियां-फलोदी प्रान्त के बापिणी में बालकों का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 16 से 22 अक्टूबर की अवधि में सम्पन्न हुआ जिसका संचालन केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने किया। उन्होंने शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर विदाई देते हुए कहा कि हम यहां सात दिन पहले आये और आज लग रहा है कि इतने जल्दी ये सात दिन पूर्ण भी हो गए। ठीक ऐसे ही हमारा जीवन भी इतनी ही तेजी से बीत रहा है। ये

अनमोल जीवन कहीं ऐसे ही नही बीत जाये, इस बात के प्रति जागने की आवश्यकता है। इसके लिए ही संघ हमें निरंतर अभ्यास करवाता है क्योंकि गीता में भी अभ्यास का ही मार्ग सफलता के लिए भगवान कृष्ण ने बताया है। ऐसा ही क्षणिक अभ्यास यहां रह के हमने भी किया। आज संघ हमें इस शिविर से विदाई दे रहा है, अगले शिविर में आने के लिए, परन्तु फिर भी यदि हम जीवन की उलझनों में उलझ के इस ओर नही आ पाए तो भी यहां से हमने जो स्वयंसेवक भाव सीखा है वो हमारे आचरण में जीवनपर्यंत रहेगा तो हम विपरीत

परिस्थितियों में भी कहीं भटकेंगे नही। शिविर में बापिणी, बेदू, साथिन, सेखाला, सेतरावा आदि गांवों के 65 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर की व्यवस्था स्थानीय सहयोगियों ने मिलकर संभाली। इसी अवधि में एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर वीर दुगार्दास राठौड़ छात्रावास बालोतरा में भी संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए महेंद्र सिंह गूजरावास ने शिविरार्थियों से कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए निर्धारित कर्तव्य का पालन करे तो संसार में कई समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जाएगा। लेकिन आज की स्थिति यह है कि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने अधिकारों के लिए ही संघर्ष करने को तत्पर है, कर्तव्य के पालन की ओर किसी का ध्यान नहीं है। क्षात्रधर्म अधिकार की नहीं कर्तव्य की बात करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का पूरा प्रशिक्षण भी हमें हमारे कर्तव्य की याद दिलाने और उसका पालन करने के लिए तैयार करने की प्रक्रिया है। कर्तव्य-पालन के मार्ग पर चलकर ही हम अपने जीवन को भी सार्थक कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि श्रेष्ठता को धारण करके ही हम समाज और राष्ट्र को भी श्रेष्ठता के मार्ग पर आगे बढ़ा सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम निरंतर अभ्यास और तपस्या द्वारा अपने जीवन में श्रेष्ठ संस्कारों का अर्जन करें। संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली हमें इसके लिए सरल एवं व्यावहारिक मार्ग प्रदान करती है। शिविर में क्षेत्र के लगभग 150 युवाओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

डूंगरपुर जिले के सकानी गांव में बालिकाओं का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 18 से 21 अक्टूबर तक संपन्न हुआ। शिविर में बालिकाओं को हमारे गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमान की चुनौतियों और भविष्य में राष्ट्र निर्माण में हमारा क्या सहयोग हो, इसके बारे में बताया गया। शिविर संचालिका लक्ष्मी कंवर खारडा ने बालिकाओं से कहा कि माता को प्रथम गुरु बताया गया है। इसका अर्थ है कि अगर माता संस्कारवान होगी तो बालक को अच्छे संस्कार अवश्य मिलेंगे। भावी पीढ़ी में श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण हो, इसके लिए ही संघ समाज की बालिकाओं को संस्कारित करने का कार्य कर रहा है। ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें हमें हमारे घरों में एवं बाहरी वातावरण में कहीं नहीं बताई जाती हैं, इसीलिए संघ हमें इन बातों को बता रहा है। आप सब भावी समाज का आधार हैं, इस बात को समझें और अपने आप को मजबूत बनाकर समाज और राष्ट्र को मजबूत बनाएं। शिविर में जिले के विभिन्न गांवों की 215 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह साजियाली, बालू सिंह जगपुरा, गुमान सिंह वालाई एवं ईश्वर सिंह वाडा कुंडली ने व्यवस्था में सहयोग किया। झालावाड़ जिले के झालरापाटन में भी बालकों का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में संपन्न हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अपनेपन को भूलें नहीं, सदैव स्मरण रखें। हम किन पूर्वजों की संतान हैं, हमारे रक्त की तासीर क्या है, इसे हम स्मरण रखेंगे तो ही पूर्वजों के मार्ग पर भी चल सकेंगे। हमारा समाज त्याग, बलिदान और वीरता के लिए जाना जाता है। अन्यों के लिए जीना और अन्यों के लिए मरना ही क्षत्रिय परंपरा रही है। इस परंपरा का निर्वहन यदि हम नहीं करते हैं तो हम क्षत्रिय कहलाने के अधिकारी नहीं बन सकेंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें हमारे उसी अपनेपन की याद दिला कर

हमारी पूर्वज परंपरा के पालन के लिए हमें सामर्थ्यवान बना रहा है। शिविर में क्षेत्र के 120 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रहलाद सिंह आमेठा, राजेंद्र सिंह रटावद, ईश्वर सिंह बरखेड़ा, नारायण सिंह मुंगेरिया, मेघ सिंह मुंगेरिया आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। नागौर संभाग के कुचामन प्रांत में श्री केलपुंज माताजी मंदिर, किनसरिया, (परबतसर) में 19 से 22 अक्टूबर तक शिविर का आयोजन हुआ। संभागप्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि यह शिविर पूर्ण मनोयोग से करें, क्योंकि परमेश्वर की कृपा से हमे स्वयं के निरीक्षण का सद्अवसर प्राप्त हुआ है। प्रत्येक

कार्यक्रम में पूर्ण रूप से तत्पर रहें। यदि हम सही मार्ग पर चलेंगे तो संसार भी सही मार्ग पर चलेगा। अतः हमें निरन्तर संघ के सम्पर्क में रहते हुए यहां पर प्राप्त शिक्षण को निरन्तर अभ्यास में बनाए रखना है। शिविर में किनसरिया, ढूंढिया, कंवलाद, ललाणा, नैणीया, हुलढाणी, जंजिला, चुड़ियास, मीठड़ी, पलाड़ा, खिदरपुरा, सिटावट, ऊंचाईड़ा, धदवाड़ा, हरसोलाव आदि गांवों के 130 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान ही 21 अक्टूबर को सभी शिविरार्थी पहाड़ी पर 1121 सीढ़ियां ऊंचाई पर स्थित कैवाय माता मंदिर के दर्शन के लिए गए तथा सायंकालीन प्रार्थना वहीं पर की। मान सिंह किनसरिया, महेन्द्र सिंह गिंगोली, बजरंग सिंह नैणीया ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी अवधि में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर श्री सुमेर कृषि फॉर्म, बडली (विजयनगर, अजमेर) में भी सम्पन्न हुआ। शिविर में अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, सीकर, झुंझनूं आदि जिलों से लगभग 60 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए शिविर संचालक भँवर सिंह बेमला ने कहा कि बड़े भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है और इसमें भी क्षत्रिय होना परम सौभाग्य की बात है। शाखा व शिविर के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें क्षत्रिय होने का वास्तविक अर्थ समझाता है और हमारे स्वधर्म - 'क्षात्रधर्म' के पालन का अभ्यास करवाता है। व्यवस्था की जिम्मेदारी जयबहादुर सिंह बडली ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर संभाली। विदाई कार्यक्रम के पश्चात आयोजित मिलन कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक छुट्टन सिंह दाबडदुम्बा, सुरेन्द्र सिंह राठौड़, महेन्द्र सिंह जामोला आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन अजमेर प्रांतप्रमुख विजयराज सिंह जालिया ने किया। कार्यक्रम के अंत में सहभोज भी रखा गया। बांसवाड़ा जिले के कोटड़ा बड़ा में भी 19 से 22 अक्टूबर की अवधि में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए टैंकबहादुर सिंह गेंहूवाड़ा ने शिविरार्थियों से कहा कि संघ की सामुहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा इस शिविर में विभिन्न गतिविधियों द्वारा क्षात्रधर्म के मार्ग पर चलने का जो अभ्यास कराया जा रहा है उसे यहां से जाने के बाद भी जारी रखें और अपने अंदर स्थित रजोगुण को सतोगुण में परिवर्तित कर समाज और राष्ट्रहित में लगाएं। इस शिविर में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, धरियावद, सलूम्बर आदि स्थानों से 140 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर व्यवस्था में राजेंद्र सिंह कोटड़ा बड़ा एवं स्थानीय ग्रामीणजनों ने सहयोग किया।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

माननीय संघप्रमुख श्री का गुजरात प्रवास

मोरचंद

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 17 से 19 अक्टूबर तक गुजरात में प्रवास पर रहे। इस दौरान उनके सान्निध्य में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। संघप्रमुख श्री 17 अक्टूबर को प्रातः रेल द्वारा अहमदाबाद पहुंचे तथा यहां से सड़क मार्ग से घोघा (भावनगर) पधारे। घोघा में दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त होने वाले वीर मुखड़ो जी गोहिल का शीश गिरा था। उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ उस स्थान पर बने मुखड़ो जी के मंदिर के दर्शन किए। यहां से सभी 20 किलोमीटर दूर खदरपर पहुंचे, जहां मुखड़ो जी का धड़ गिरा था। यहां भी उनकी स्मृति में बने मंदिर के सभी ने दर्शन किए। खदरपर में 2008 में जिस स्थान पर श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर लगा है, वहां पर संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। इसके पश्चात संघप्रमुख श्री ने भावनगर पहुंचकर निष्कलंक महादेव मंदिर के दर्शन किए तथा भावनगर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों से भेंट की।

लेकावाड़ा

18 अक्टूबर को संघप्रमुख श्री वरिष्ठ स्वयंसेवक छनुभा पछेगाम की सेवानिवृत्ति के उपलक्ष में आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया और समाज में आ रहे पतन को रोकने के लिए संस्कार सृजन और संगठित शक्ति के निर्माण की आवश्यकता की बात कही। यहां से माननीय संघप्रमुख श्री साणंद पहुंचे जहां उनके सान्निध्य में पारिवारिक स्नेहमिलन व स्नेहभोज का आयोजन शिल्पग्राम फार्म हाउस में किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि हमें जिस उद्देश्य से जीवन मिला है, उसकी प्राप्ति के लिए यदि हम प्रयत्न नहीं करते हैं तो यह जीवन व्यर्थ जाएगा। हम संसार में आए हैं तो हमें धन भी कमाना है, परिवार का पालन पोषण भी करना है, अन्य सभी कार्य भी करने हैं, लेकिन जो जीवन का मुख्य उद्देश्य हैं उसको यदि इन कार्यों में भुला दें तो यह इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ खोने के समान होगा। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है कि - 'करने आए कर न सके तो जीवन तरुवर व्यर्थ फले हैं'। संघ हमारे जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति का ही मार्ग है। उन्होंने कहा कि पारिवारिक भाव संघ का आधार है। संघ स्वयं अपने आप में कोई संस्था नहीं बल्कि एक विस्तृत परिवार है और परिवार के सदस्यों में यदि धैर्य, प्रेम और कष्ट सहिष्णुता जैसे गुण न हों तो वह परिवार बिखर जाता है। आप सब भी संघ को अपना परिवार समझकर कष्ट सहकर भी संघ का कार्य करते हैं, इसीलिए संघ निरंतर आगे बढ़ रहा है। कार्यक्रम में मध्य गुजरात संभाग के स्वयंसेवक सपरिवार सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

19 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री ने गांधीनगर स्थित अक्षरधाम मंदिर पहुंचकर दर्शन किए जहां मंदिर के महंत ने उनसे भेंट की व पुस्तकें भेंट कर सम्मान किया। इसके पश्चात वे लेकावाड़ा में बा श्री दशरथ बा महेंद्र सिंह परमार राजपूत आईएएस कैरियर एकेडमी पहुंचे जहां संस्थान के निदेशक अशोक सिंह परमार ने सहयोगियों के साथ उनसे भेंट की। यहां आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि जीत सदैव संगठन की होती है क्योंकि संगठन में शक्ति होती है और शक्ति में सामर्थ्य होता है। जिसमें सामर्थ्य होता है, उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है। वह हर लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आप भी यहां किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही तैयारी कर रहे हैं। किसी भी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पहली आवश्यकता है - संकल्प। यदि संकल्प दृढ़ नहीं होगा तो हम लक्ष्यप्राप्ति के लिए निश्चित मार्ग पर चल ही नहीं पाएंगे। इसलिए अपने संकल्प को दृढ़ बनाएं। उन्होंने पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा बाल्यकाल से झेली गई कठिनाइयों के बारे में बताया और कहा कि उन्होंने सभी प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भी अपने मार्ग को छोड़ा नहीं। उनके संकल्प का ही रूप श्री क्षत्रिय युवक संघ है। जो महापुरुष होते हैं उनकी सोच जमाने से बहुत आगे होती है। पूज्य तनसिंह जी ने भी हमारे समाज की आज की स्थिति को आजादी से पूर्व ही भांप लिया था और उसी स्थिति को बदलने के लिए उन्होंने संघ की स्थापना की। आप यहां प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन यह जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। पूज्य तनसिंह जी ने जीवन में सभी प्रकार की सफलताएं प्राप्त की। वे केवल अध्ययन में ही सर्वोत्कृष्ट नहीं थे बल्कि खेल, तैराकी, लेखन जैसी सभी गतिविधियों में भी आगे थे। परंतु उन्होंने अपने आप को इन सफलताओं तक सीमित नहीं रखा, अपितु अपने जीवन को निरंतर परिष्कृत करते रहे और अपने तपस्वी जीवन से समाज को जागृत करने का कार्य किया। इसीलिए हम सभी उन्हें स्मरण करते हैं और उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं। आप भी अपने जीवन को सीमित नहीं करें बल्कि सकारात्मक भाव से निरंतर आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहें। अभी आप जिस लक्ष्य को लेकर यहां आए हैं उस पर दृढ़ता से बढ़ते रहें। लक्ष्यवेध के समय अर्जुन को जिस प्रकार चिड़िया की आंख के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता था, उसी प्रकार आपको भी अपने लक्ष्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखना चाहिए। साथ ही यह भी याद रखें कि आपका लक्ष्य कभी भी आपके लिए भार न बने। दिए बिना कुछ मिलता नहीं और किए बिना कुछ होता नहीं, इस सनातन सिद्धांत को याद रखकर आप आगे बढ़ें और समाज के प्रति आपका दायित्व भाव बना रहे तो आप भी संघ के स्वयंसेवक ही हैं, चाहे आप जहां भी रह रहे हो। कार्यक्रम के पश्चात संघप्रमुख श्री शाम को रेल द्वारा जयपुर के लिए रवाना हुए।

जोधपुर विश्वविद्यालय में मनाई सम्राट मिहिरभोज की जयंती

क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार की जयंती जोधपुर में प्रताप युवा शक्ति जोधपुर द्वारा 18 अक्टूबर को बास्केट बॉल कोर्ट, JNVU पुराना परिसर में समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में सम्राट मिहिरभोज की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की गई। भाजपा नेता जसवंत सिंह इन्दा ने विस्तार से सम्राट मिहिरभोज का जीवन परिचय दिया तथा उनके शासनकाल में हुए युद्धों के बारे में बताते हुए कहा कि आठवीं शताब्दी के समय सम्राट मिहिरभोज ने जिस प्रकार अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भी भारत की अखण्डता को बनाए रखा, वह सभी के लिए प्रेरणादायक है। ऐसे महापुरुषों के प्रति हम सभी को कृतज्ञ होना चाहिए। डॉ. वीरेन्द्र सिंह इन्दा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में प्रोफेसर राजश्री राणावत, प्रोफेसर महेन्द्र सिंह राजपुरोहित सहित अनेकों गणमान्य नागरिक, वरिष्ठ छात्रनेता और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे। आयोजकों की ओर से रघुवीर सिंह बेलवा राणाजी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा समय-समय पर ऐसे आयोजन करते रहने की बात कही। मंच संचालन भैरूसिंह भाटी चाबा ने किया। देवातु ग्राम पंचायत के सरस्वती विद्यालय में भी सम्राट मिहिरभोज की जयंती मनाई गई। चंद्रवीर सिंह भालू ने मिहिर भोज के इतिहास के बारे में जानकारी दी। देवातु सरपंच पर्वत सिंह, छोटे सिंह, महेंद्र सिंह, कुंभ सिंह, उत्तम सिंह, जेपी सिंह सहित अनेकों समाज बंधुओं ने मिहिर भोज की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इसके अतिरिक्त श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा अनेक स्थानों पर संघ के द्वितीय संघप्रमुख आयुवान सिंह जी हुड़ील की जयंती के साथ मिहिरभोज जी की जयंती भी शाखा स्तर पर मनाई गई।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का स्नेहमिलन व रात्रि प्रवास कार्यक्रम संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में चित्तौड़गढ़ जिले के सहयोगियों का एकदिवसीय स्नेहमिलन व रात्रि प्रवास कार्यक्रम मुरलिया में 15 अक्टूबर को संपन्न हुआ जिसमें विगत माह चितौड़गढ़ में आयोजित किसान सम्मेलन के बारे में सहयोगियों के अनुभवों पर चर्चा की गई व क्षेत्र में फाउंडेशन के कार्य को बढ़ाने के संबंध में विमर्श किया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के केंद्रीय समन्वयक रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्य, कार्यप्रणाली और कार्ययोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और कहा कि यदि हम सकारात्मक भाव के साथ कार्य करें तो उसके सुखद परिणाम अवश्य आते हैं। चित्तौड़गढ़ में हुए किसान सम्मेलन के बाद यहां के सहयोगियों व अन्य समाजों के व्यक्तियों की जो प्रतिक्रियाएं आ रही हैं वे इसी बात का प्रमाण हैं। उपस्थित सहयोगियों को बताया गया कि फाउंडेशन का शक्ति स्रोत श्री क्षत्रिय युवक संघ है और हम सब भी तब ही निरंतर रह पायेंगे जब इस शक्ति स्रोत से अपने आपको जोड़े रखेंगे। इस लिए हर उस अवसर का उपयोग करें जो हमें संघ के निकट ला सके एवं संघ को हमारे में अवतरित होने को आमंत्रित कर सके। फाउंडेशन के सदस्य हर्षवर्धन सिंह रुद ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के चित्तौड़गढ़ जिले में आगामी कार्यक्रमों की कार्ययोजना बताई, जिसमें इसी तरह का रात्रि प्रवास कार्यक्रम तहसील स्तर पर किया जाना निश्चित हुआ। इस दौरान केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा, नरपत सिंह भाटी, भूपेन्द्र सिंह डगला का खेड़ा, श्याम सिंह हाड़ा, राजदीप सिंह नेतावल, राघवेंद्र सिंह भींचोर, महेंद्र सिंह जालेऊ, दिलीप सिंह भदेसर, भंवर सिंह मुरलिया, अचल सिंह भाटी, जीवन सिंह गौड़, लक्ष्मण सिंह बडोली, भानु प्रताप सिंह नाहर गढ़, सूर्य प्रताप सिंह गुढा, जितेंद्र सिंह नाहरगढ़, कुलदीप सिंह डाबला सहित कई सहयोगी उपस्थित रहे।

संपादकीय

पक्ष विपक्ष के अतिवाद और त्यौहारों में छिपी भारतीयता

देश ने हाल ही में दीपावली मनाई जो निर्विवाद रूप से हमारे देश का सबसे बड़ा सांस्कृतिक त्यौहार है। प्रायः दीपावली से पहले ही आतिशबाजी के प्रयोग को लेकर देशभर में एक बहस का वातावरण बनता है जिसमें पटाखों के प्रयोग के पक्ष और विपक्ष में तर्कों और प्रतिक्रियाओं को लेकर सोशल मीडिया अखाड़ा बन जाता है। ऐसी ही बहस होली के अवसर पर होली खेलने में पानी के उपयोग को लेकर भी होती है। सनातन संस्कृति के अन्य त्यौहारों पर भी प्रायः किसी न किसी बहाने ऐसी बहस हर बार होती ही है। इस बहस से सौहार्द, प्रेम, उमंग और उल्लास के साथ मनाए जाने डाले त्योहार को अवांछित और अनावश्यक रूप से विवाद का विषय बना दिया जाता है। दिवाली पर आतिशबाजी करने के मुद्दे पर दोनों पक्ष ने अनेक तर्क देते हैं। पटाखों के प्रयोग का विरोध करने वाले अधिकांश लोगों, जिनमें राजनेता, सिनेमा और खेल जगत के सितारे, तथाकथित धर्मनिरपेक्ष एवं बुद्धिवादी चिंतक आदि सम्मिलित हैं, अपने विरोध का मुख्य आधार पटाखों से होने वाले वायु और ध्वनि प्रदूषण को बनाते हैं। इनके तर्क निश्चित रूप से प्रभावशाली है। पर्यावरण के प्रति चिंता करना और उस को होने वाले नुकसान को रोकना निश्चित रूप से हम सभी का सामूहिक दायित्व है और उसके लिए जिस स्तर पर जो भी प्रयास किए जा सकते हैं वे अवश्य किए जाने चाहिए। प्रकृति प्रेमी भारत के संवेदनशील मन को ऐसे तर्क स्वभावतः छूते हैं और सामान्य भारतीय इस दुविधा में पड़ जाता है कि क्या दीपावली पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए आतिशबाजी करना गलत और हानिकारक है? लेकिन इस दुविधा में कोई निर्णय लेना उसके लिए तब कठिन हो जाता है, जब वह देखता है कि जो लोग हमारे सांस्कृतिक त्योहारों पर पर्यावरण की रक्षा के बहाने से आक्रमण करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में ना तो पर्यावरण संरक्षण के लिए कोई योगदान देते हुए दिखाई देते हैं ना ही अनेकों अन्य गतिविधियों से पर्यावरण को होने वाले नुकसान के संबंध में कोई राय व्यक्त करते हैं। जो राजनेता दिवाली पर पटाखे ना जलाने का ज्ञान देते हैं, चुनावों में जीतने पर उन्हीं के कार्यकताओं द्वारा की जाने वाली आतिशबाजी उन्हें गलत नहीं लगती। जो सितारे दिवाली के अवसर पर पटाखों से होने वाले नुकसान के बारे में जनता को जागरूक करने का प्रयत्न करते हैं, उनकी संवेदनशीलता तंबाकू और शराब जैसे हानिकारक उत्पादों के विज्ञापन करते समय कहीं खो जाती है। तथाकथित धर्मनिरपेक्ष चिंतकों की जुबान पर अन्य गतिविधियों से पर्यावरण को होने वाले नुकसान के संबंध में बोलते हुए ताले लग जाते हैं। इसीलिए जब सामान्य भारतीय देखता है कि दिवाली पर केवल एक दिन के लिए होने वाले प्रदूषण को लेकर शोर मचाने वाला यह वर्ग ना केवल अन्य धर्मों के त्योहारों पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली विभिन्न गतिविधियों के संबंध में चुप रहता है बल्कि वाहनों व उद्योगों से होने वाले मुख्य प्रदूषण पर ध्यान ही नहीं देता तो उसके लिए यह समझना कठिन नहीं है कि इस सब के पीछे पर्यावरण सुरक्षा की चिंता की अपेक्षा न्यस्त स्वार्थों के लिए हमारी आस्थाओं पर चोट करके हमें अपनी परंपराओं से विमुख करने का षड्यंत्र मुख्य बात है।

दूसरी ओर इस षड्यंत्र की प्रतिक्रिया में भी जो व्यवहार हमारे तथाकथित सांस्कृतिक पहरेदारों द्वारा किया जाता है, वह भी भारतीयता और दीपावली जैसे पवित्र त्योहार की गरिमा को बढ़ाने वाला होने की अपेक्षा बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति से अधिक प्रभावित लगता है। वे एक अतिवाद का जबाब दूसरे अतिवाद से देने को उद्यत होते हैं। वे इस प्रकार व्यवहार करते हैं जैसे दीपावली मनाने का एकमात्र अर्थ आतिशबाजी जलाना ही रह गया है। दीपावली का पर्व जिस सत्य की विजय का संदेश देता है उस सत्य से उनका कोई लेना देना दिखाई नहीं देता बल्कि पटाखों के शोर में अपनी विजय और विरोधियों की पराजय का उद्घोष के साथ साथ जाने अनजाने बाजारवादी ताकतों का पोषण ही उनके लिए महत्त्वपूर्ण रह गया है। ठीक उसी प्रकार जैसे राम के चरित्र की महानता को भुलाकर 'जय श्री राम' का भी राजनीतिक और उन्मादी नारे के रूप में आजकल उपयोग कर लिया जाता है। वे यह भूल जाते हैं कि 1940-50 से पूर्व तक हम बिना आतिशबाजी के भी इससे कहीं अधिक उत्साह और प्रेम के साथ दीपावली मनाते आ रहे हैं। वे इस पर भी ध्यान नहीं देते कि भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि और संधारको के रूप में पर्यावरण को होने वाले नुकसान के बारे में हमें किसी अन्य को सीख देने की आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए बल्कि हमारा स्वयं का विवेक ही इतना जागृत होना चाहिए कि हम यह समझ सकें कि आतिशबाजी छोटे बच्चों को उत्सव के प्रति आकर्षित करने का एक सामान्य तरीका भर है। इसलिए उसे बच्चों तक ही सीमित रखकर न्यूनतम मात्रा में ही प्रयोग किया जाए जिससे न तो पर्यावरण को हानि हो, न ही हमारा प्रसन्नता व्यक्त करना किसी के लिए तकलीफ का कारण बने।

वास्तव में दीपावली का त्योंहार ही नहीं, बल्कि हमारे अन्य सभी सांस्कृतिक त्योंहार भी हमारी संस्कृति के श्रेष्ठतम तत्वों के व्यावहारिक आचरण को सामूहिक रूप प्रदान करने का उद्देश्य लिए हुए होते हैं। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है कि हम उन श्रेष्ठताओं को पहले अपने आचरण में उतारें और फिर ऐसे पर्व, त्योहारों और अन्य अवसरों के माध्यम से उसको सामूहिक स्वरूप प्रदान करें। जब हम ऐसा करेंगे तो न तो हमारी संस्कृति को नष्ट करने के द्वेषपूर्ण षड्यंत्र सफल हो सकेंगे और न ही हमारे भीतर पनपने वाला मूर्खतापूर्ण अतिवाद पोषण पा सकेगा। इसलिए आएं, हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए हम सब उद्धत होवें, नारों और जयकारों से नहीं बल्कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप अपना आचरण बनाकर। इसी उद्देश्य से श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें हमारे इन सांस्कृतिक मूल्यों और उनके महत्त्व से केवल परिचित ही नहीं कराता बल्कि गीता में वर्णित अभ्यास और वैराग्य के मार्ग पर आधारित अपनी क्रियात्मक प्रणाली से उन्हें आचरण में ढालने का नियमित अभ्यास भी करवाता है।

डूंगजी जवाहर जी व बलजी भूरजी पुरस्कार समिति का तृतीय कार्यक्रम

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी डूंगजी जवाहर जी एवं बलजी भूरजी की स्मृति में उनके गांव पाटोदा में विगत दो वर्षों से किया जा रहा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम इस वर्ष भी आयोजित किया गया। तृतीय पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में डूंगजी जवाहर जी पुरस्कार गांव से मुंबई जाकर व्यवसायिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले रमेश जी पारीक को एवं बलजी भूरजी पुरस्कार राजनीतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले राजेंद्र जी ढाका को दिया गया। इसी प्रकार बलजी भूरजी के सहयोगी रहे गणेशाजी की स्मृति में पुरस्कार गांव में वर्षों से पेयजल की आपूर्ति व्यवस्था में लगे जीवराज सिंह को दिया गया। डूंगजी जवाहर जी के सहयोगी रहे लोठ्याजी की स्मृति में दिया जाने वाला पुरस्कार विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों में अपना अध्ययन जारी रख अध्यापक के रूप में चयनित हुई सुनीता धाभाई को व सांमता जी पुरस्कार गांव के राजकीय विद्यालय में कक्षा 10 में 94 प्रतिशत अंक हासिल करने वाले पंकज सेन को दिया गया। पुरस्कार वितरण के पश्चात सभी संभागीयों को यथार्थ गीता वितरीत की गई एवं इन महान स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में लिखी गई एक पुस्तक भी सभी को दी गई।

देलदर की मातृशक्ति शाखा में मनाया अधिकतम संख्या दिवस

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सिरोही प्रांत में देलदर गांव में मातृशक्ति की शाखा में 23 अक्टूबर को अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में देलदर, मांडानी, नारादरा व बारेवड़ा सहित आसपास के गांवों से स्वयंसेविकाओं की उपस्थिति रही।

सेखाला शाखा में दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन

शेरगढ़ प्रांत में सेखाला शाखा द्वारा दिवाली स्नेहमिलन का कार्यक्रम 25 अक्टूबर को गोगादेव जलंधरनाथ मन्दिर सेखाला में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई तथा आगामी सत्र में होने वाली सांघिक गतिविधियों में सेखाला ग्राम की भूमिका पर भी चर्चा की गयी। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र सिंह सेखाला द्वारा किया गया। पदम सिंह, गोपाल सिंह, देवेंद्र सिंह, भोमसिंह, जितेंद्रसिंह केतु, महेंद्र सिंह, भोम सिंह सहित अनेकों स्वयंसेवक व समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन के पश्चात सभी ने एक-दूसरे का मुंह मीठा करा के दीपावली की शुभकामनाएं दी।

(पृष्ठ दो का शेष)

8 दिन...

जयपुर संभाग में पावटा स्थित बुचारा फार्म हाउस में भी चार दिवसीय शिविर 17 से 20 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन शेखावाटी संभागप्रमुख खींव सिंह सुलताना ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की संपूर्ण कार्यप्रणाली गीता के कर्मयोग पर आधारित है, इसलिए यह हमारे जीवन को नई दिशा देने में सक्षम है। यहां खेल-खेल में हम जीवन के आधारभूत सिद्धांतों को अपने आचरण का अंग बना कर चरित्र निर्माण के महान कार्य को संपादित कर रहे हैं। व्यक्ति के चरित्र निर्माण से ही समाज और राष्ट्र का भी चरित्र निर्मित हो सकता है, इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने इस प्रक्रिया का सूत्रपात किया। शिविर में बुचारा, टसकोला, नारहेड़ा, पलेई, सामी, रुखासर आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जयपुर संभागप्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**झालरापाटन (झालावाड़),** आनन्द धाम नवलखा किला।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**कोटा।**
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	06.11.2022 से 09.11.2022 तक	**कीता,** जैसलमेर।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.11.2022 से 14.11.2022 तक	**फरीदाबाद,** हरियाणा।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	17.11.2022 से 20.11.2022 तक	**जैनपुर,** उत्तरप्रदेश।
06.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.11.2022 से 28.11.2022 तक	**नैनावा (बनासकांठा),** गुजरात।
07.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**डूंगरगढ़,** बीकानेर।
08.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**आलोक आश्रम,** बाड़मेर।
09.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**वंदे मातरम स्कूल,** पाली।
10.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**नाचना,** जैसलमेर
11.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**तोसनिवाल धर्म शाला धनौप माता मन्दिर परिसर,** धनौप जिला भीलवाड़ा (केकड़ी से बिजयनगर गुलाबपुरा प्राईवेट बस मार्ग पर वाया फुलिया कलां वाली बस से माता जी मन्दिर मार्ग पर उतरें। मेवाड़ वागड़ हाड़ौती से आने वाले वाया शाहपुरा भीलवाड़ा होकर फुलियाकला पुलिस स्टेसन के सामने उतरें । वहां से बिजयनगर जाने वाली प्राईवेट बस पकड़कर मन्दिर मार्ग पर उतरें । अजमेर से आने वाले बिजयनगर रेल्वे फाटक से धनौप होकर जाने वाली केकड़ी की बस से पहुंचे। जयपुर से आने वाले वैशाली डिपो बस जयपुर भीलवाड़ा वाया केकड़ी फुलिया से पुलिस स्टेशन उतरें व प्राईवेट बस से मन्दिर उतरें । **संपर्क सूत्र** 9602246116, 9950286101, 9799278932
12.	मा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**जयमल कोट पुष्कर,** अजमेर **संपर्क सूत्र** 9414005449, 9749922222, 9413040742

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

खींवसर में संपर्क यात्रा का आयोजन

नागौर संभाग में खींवसर मंडल में 16 अक्टूबर को संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें देउ, दांतीणा, आचीणा, करणु, पांचलासिद्धा में सम्पर्क किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने संपर्क यात्रा में स्वयं सेवकों व समाज बंधुओं से संवाद करते हुए कहा कि शाखा हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शाखा से हमारे जीवन में निरन्तरता और नियमितता का संस्कार विकसित होता है जो हमारा चरित्र निर्मित करता है। श्रेष्ठ चरित्र ही हमारे जीवन मूल्यों को सही मार्ग की ओर बढ़ाने में सहायक होता है। हमारे जीवन मूल्य हमारे पूर्वजों के अनुरूप हों, इस हेतु हमें निरन्तर श्री क्षत्रिय युवक संघ के सम्पर्क में रहना चाहिए और इसके लिए शिविर और शाखाएं श्रेष्ठतम उपाय हैं। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों में नागौर प्रांत में पंद्रह नई शाखाएं शुरू हुई हैं। खींवसर क्षेत्र में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को घर-घर तक पहुंचाने के लिए अधिकाधिक शाखाएं प्रारंभ कर सकारात्मक वातावरण में कार्य करें। यात्रा के दौरान आगामी दिनों में डीडवाना में आयोजित होने वाले सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के लिए भी पात्र स्वयंसेवकों से संपर्क किया गया। बजरंग सिंह भुण्डेल, शैतान सिंह दांतीणा, विक्रम सिंह खारीकर्मसोतां, जब्बर सिंह दौलतपुरा आदि यात्रा में साथ रहे।

गुडामालानी प्रांत में छह गांवों में दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन

बाड़मेर संभाग के गुडामालानी प्रांत के छह गांवों में 25 अक्टूबर को दीपावली स्नेहमिलन आयोजित हुए जिनमें ग्रामवासियों को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई। आईनाथ मंदिर खारी, भाऊड़ा, सुदा बेरी सोढो की ढाणी, आशापुरा माता मंदिर बाछला, बुलगांव तथा राणासर कला में आयोजित इन स्नेहमिलन कार्यक्रमों में हमारे गौरवशाली इतिहास के बारे में बताकर हमारे महान पूर्वजों के आदर्शों का पालन करते हुए सुमार्ग पर चलने की बात कही गई। स्वरूप सिंह खारी स्वयंसेवकों सहित सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहे। उन्होंने दीपावली की रात्रि को पूज्य तनसिंह जी के चिंतन और उसके परिणाम स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के बारे में बताया।

सूर्यवीर सिंह राठौड़ केंद्रीय गृहमंत्री पदक से सम्मानित

बांसवाड़ा के पुलिस उपाधीक्षक सूर्यवीर सिंह राठौड़ को 12 अक्टूबर को जयपुर में आयोजित हुए सम्मान समारोह में पुलिस महानिदेशक द्वारा केंद्रीय गृहमंत्री पदक से सम्मानित किया गया। यह पदक प्रतिवर्ष अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए दिया जाता है। सूर्यवीर सिंह को यह पदक 2018 में आयोजित हुई राजस्थान कांस्टेबल भर्ती परीक्षा में ऑनलाइन नकल गिरोह का भंडाफोड़ करने में उनकी भूमिका के लिए प्रदान किया गया है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

छोटे किंतु जुझारू जीवन से पीढ़ियों को प्रेरणा दी आयुवान सिंह जी ने: संघप्रमुख श्री

(पेज एक से लगातार)

अपने अग्रगामियों से प्रेरणा लेकर हम भी इस मार्ग पर निरंतर और निष्ठापूर्वक चलते रहें तो हम भी उस उद्देश्य को अवश्य पा सकेंगे। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने आयुवान सिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताते हुए कहा कि जब राजस्थान सरकार के भूमि अधिग्रहण कानून के द्वारा राजपूतों की आजीविका के प्रमुख साधन जमीनों को छीनने का प्रयास किया गया, तब आयुवान सिंह जी इस अन्याय के विरोध में भूस्वामी आंदोलन के प्रणेता बने। इस आंदोलन की सफलता में आयुवान सिंह जी के संघर्ष और रणनीति का बहुत बड़ा योगदान था।

17 अक्टूबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 102वीं जयंती के उपलक्ष में देशभर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। चित्तौड़गढ़ स्थित भुपाल पब्लिक स्कूल परिसर में आयुवान सिंह जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने आयुवान सिंह जी का जीवन परिचय देते हुए उनके कृतित्व और व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि संघप्रमुख रहते हुए उन्होंने भूस्वामी आंदोलन का कुशलता पूर्वक नेतृत्व किया। उनके व्यक्तित्व से सीख लेकर हम सब एकजुट रहें, जागृत रहें, आत्म चिंतन करें और आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करें। वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा ने कहा कि पूज्य आयुवान सिंह जी एक युगपुरुष थे। प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी ने भी उनके बारे में कहा कि मैंने इतना असाधारण एवं विद्वान व्यक्ति भारत में नहीं देखा। वह ऐसे कूटनीतिज्ञ थे, जिनके सामने तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू को भी झुकना पड़ा। इतिहासकार प्रोफेसर लोकेंद्र सिंह ज्ञानगढ़ ने बताया कि 1945 से 1955 के संक्रमण काल में पू. आयुवान सिंह जी ने राजपूत जाति को नई दिशा दी। वह कुशल वक्ता, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार, इतिहास मर्मज्ञ थे, जिन्होंने प्रथम संघप्रमुख पू. तनसिंह जी के साथ रहकर राजपूत जाति के साथ उस समय हुए अन्याय का कठोरता से प्रतिकार किया जिससे केंद्र सरकार को भी झुकना पड़ा। इस अवसर पर हर्षवर्धन सिंह रूद, भुपाल पब्लिक स्कूल एम.डी. लालसिंह भाटियों का खेड़ा, जौहर स्मृति संस्थान के संयुक्त मंत्री गजराज सिंह बराड़ा, कोषाध्यक्ष गोवर्धन सिंह भाटियों का खेड़ा, क्षत्रिय महासंघ के जिलाध्यक्ष कान सिंह सुवावा सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। सीकर के श्री कल्याण राजपूत छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसे संबोधित करते हुए शिक्षाविद् लक्ष्मण सिंह मोहनवाड़ी ने कहा कि एक साधारण परिवार में जन्म लेकर और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपने पुरुषार्थ से जिन्होंने समाज, राजनीति और लेखन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शिखर को छुआ, ऐसे अनूठे व्यक्तित्व के धनी थे श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील। उनके द्वारा लिखित कई पुस्तकों की श्रृंखला में 'मेरी साधना' पुस्तक की तुलना विद्वजनों ने रविंद्र नाथ टैगोर की पुस्तक 'गीतांजलि' से की है। ईश्वर सिंह राठौड़ (सेवानिवृत अतिरिक्त जिला कलक्टर) ने कहा कि कुंवर आयुवान सिंह हुडील इतने बड़े राजनीतिक चिंतक थे कि वो जोधपुर महाराजा हनुवंत सिंह, जयपुर राजमाता गायत्री देवी जैसी हस्तियों के राजनीतिक सलाहकार रहे। संघ के सीकर प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने कहा कि आयुवान सिंह जी के जीवन को समझना है तो श्री क्षत्रिय युवक संघ को समझना होगा और संघ से जुड़ाव बनाकर हम अपना सर्वांगीण विकास कर पाएंगे और ये ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। देवेंद्र सिंह छिंछास ने आयुवान सिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में शेर सिंह बिडोली, छगन सिंह नागवा, संदीप सिंह दूजोद, किशोर सिंह दुजोद, रणवीर सिंह राजपुरा, रतन सिंह छिंछास, रूपेंद्र सिंह बोची सहित समाज के गणमान्य नागरिक और छात्रावास के छात्र उपस्थित रहे। नागौर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास में भी आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने पूज्य आयुवान सिंह जी का परिचय बताते हुए कहा कि आयुवान सिंह जी ने पारिवारिक परिस्थितियों के

कारण पढ़ाई बीच में छोड़कर नौकरी प्रारंभ की लेकिन जब समाज को आवश्यकता हुई तब नौकरी छोड़कर पूर्ण समर्पण से समाज कार्य में तल्लीन हो गये। वे इतने जुझारू और कर्मठ व्यक्तिव के धनी थे कि अपने छोटे से जीवनकाल में भी समाज में जागरूकता का संचार किया और समाज में निराशा का जो वातावरण बन रहा था उस वातावरण को तोड़कर उत्साह का संचार कर समाज को भविष्य का मार्ग दिखाया। कार्यक्रम का संचालन जब्बर सिंह दौलतपुरा ने किया। छात्रावास अधीक्षक सुमेर सिंह जोधियासी सहित छात्रावास के सभी बंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। नागौर संभाग में सागू बड़ी, आयुवान निकेतन (कुचामन सिटी), निम्बी जोधा, हरसोलाव, चारभुजा छात्रावास मेड़ता, दधवाड़ा, देऊ, छापड़ा, ऊँचाइड़ा, गुगरियाली, ऊंटालड़, ढींगसरी, हिम्मत राजपूत छात्रावास डीडवाना आदि स्थानों पर भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए।

सूरत में संघ के द्वितीय संघप्रमुख आयुवान सिंह जी हुडील एवं क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी ने कहा कि वर्तमान समय में सुसंस्कृत व संगठित समाज की महती आवश्यकता है क्योंकि ऐसा समाज ही राष्ट्र की प्रगति में सहयोगी हो सकता है। आयुवान सिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें ऐसे समाज के निर्माण में जुटना चाहिए। कार्यक्रम में जबर सिंह भिंयाड़, चैन सिंह सिराणा, भोपाल सिंह सामल, भवानी सिंह माडपुरिया व श्याम सिंह मालूंगा आदि ने भी विचार रखे। सभी वक्ताओं द्वारा वर्तमान में राजनेताओं द्वारा क्षत्रिय महापुरुषों को अन्य जातियों के साथ जोड़कर राजनीतिक लाभ के लिए इतिहास विकृतिकरण के प्रयासों को रोकने की आवश्यकता जताई गई। संचालन दिलीप सिंह गड़ा ने किया। प्रांतप्रमुख खेतसिंह चांदेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मुंबई प्रांत में भी विभिन्न स्थानों पर आयुवान सिंह जी व मिहिरभोज प्रतिहार की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई। नारायण शाखा भायंदर में आयोजित कार्यक्रम में आयुवान सिंह जी के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में विक्रम सिंह लीलसर और अनोप सिंह करड़ा ने बताया। प्रांतप्रमुख रणजीत सिंह आलासन ने इन महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलने की बात कही। कार्यक्रम का संचालन मिठू सिंह डूंगरी ने किया। वीर दुगार्दास शाखा मलाड में आयोजित कार्यक्रम में सम्भागप्रमुख नीर सिंह सिंघाना सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। तनेराज शाखा गिरगांव चौपाटी, प्रताप शाखा खारघर, दुर्गा महिला शाखा भायंदर, वीरमदेव शाखा भिवंडी तथा अखेराज शाखा सांताक्रुज में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। सैकड़ों की संख्या में समाजबंधुओ ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया व महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। हनवंत राजपूत छात्रावास, जोधपुर में भी आयुवानसिंह जी व सम्राट मिहिरभोज की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गयी। मोहनसिंह गंगासरा ने दोनों महापुरुषों का जीवन परिचय दिया। कान सिंह नांदडा ने इन महापुरुषों के पदचिह्नों पर चलने का आह्वान किया। शेरगढ प्रांतप्रमुख भैरू सिंह बेलवा ने कहा कि श्रद्धेय आयुवान सिंह जी रचित साहित्य मार्मिक और ऐतिहासिक होने के साथ ही समाज की पीड़ा को समझने का माध्यम भी है तथा जीवन की प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरने हेतु पथ प्रदर्शित करने वाला है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन अजमेर टीम द्वारा आयुवान सिंह जी हुडील जयंती कार्यक्रम श्री जगदम्बा छात्रावास केकड़ी अजमेर में आयोजित हुआ। संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया ने आयुवान सिंह जी का जीवन परिचय देते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम में केकड़ी प्रधान होनहार सिंह राठौड़, दशरथ सिंह भराई, देवेन्द्र सिंह सांकरिया, रिपुदमन सिंह बघेरा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। छोटी रानी स्थित भगवान शिव मंदिर परिसर में भी जयंती मनाई गयी जिसमें हीर सिंह लोड़ता द्वारा आयुवान सिंह जी का परिचय दिया गया और संघ की कार्य प्रणाली के बारे में बताया गया। नाथू सिंह छोटीरानी, गोविन्द सिंह छोटी रानी, अजय पाल सिंह गुडा पृथ्वीराज ने भी अपने विचार रखे। पाली प्रांत के सोजत मण्डल में सारंगवास शाखा में जयन्ती मनाई गई। मारवाड़ जंक्शन मण्डल में जोजावर शाखा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें महिपाल सिंह बासनी और डॉ. प्रवीणसिंह बागोल स्वयंसेवको सहित उपस्थित रहे। महाराजा हनुवंत सिंह जी उद्यान, सुमेरपुर में भी जयंती मनाई गई। उदयपुर में बी.एन. विश्वविद्यालय परिसर में पूज्य आयुवानसिंह जी की जयन्ती महाराणा संग्राम सिंह शाखा में मनाई गई। संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला व बृजराज सिंह खारड़ा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जसवंतपुरा स्थित नृपालदेव छात्रावास में भी क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज और पूज्य श्री आयुवान सिंह जी की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

हृदय का अंधकार..

हमारे जीवन में इस प्रकार के अंधकार को समाप्त करने का प्रयास संघ करता है लेकिन हम उस संसार में रहते हैं जहां अंधकार ही अंधकार है। आज सारे संसार में एक भय का, भ्रम का वातावरण है। उसका कारण भी वह अंधकार है क्योंकि हम सब लोग जानते हैं कि अंधकार भय पैदा करता है। अंधेरे में रस्सी भी सांप दिखाई देने लगती है, हिलता हुआ पौधा भी प्रेत लगने लगता है। ऐसा ही भय, ऐसा ही भ्रम हमारे अंतर में पैदा हो चुका है, हमारे समाज में पैदा हो चुका है क्योंकि वहां अंधेरा छा गया है। उसी अंधेरे के कारण पूरा समाज आज भयाक्रांत है, पूरा समाज भ्रमपूर्ण स्थिति में है। वह अभिमान में जी रहा है लेकिन वह अभिमान भी भ्रम है। ऐसे अंधकार को, ऐसे भय को, ऐसे भ्रम को दूर करना है तो प्रकाश की किरण को लाना पड़ेगा। नए सूर्योदय की किरण को हमारे भीतर, हमारे समाज के भीतर प्रवेश कराना होगा। यही कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। उपर्युक्त बात माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने गुजरात में धोलेरा गांव में 28 अक्टूबर से 3 नवंबर तक आयोजित हो रहे माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ हमें बताता है कि किस प्रकार उस ज्योति की चिंगारी को हम अपने हृदय में आरोपित कर सकते हैं। संघ हमें बताता है कि हमने जिस कौम में जन्म लिया है उसके हित में जीवन बिताएं। वह हित क्या है? भौतिक सुख समृद्धि को हित समझना केवल भ्रम है। यदि मैं मेरे समाज का हित चाहता हूं, तो वह केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से संभव नहीं है। जिस भ्रम को हम पाले हुए हैं कि हम बहुत शिक्षा प्राप्त कर लें, बहुत बड़े पद को प्राप्त कर लें, बहुत धन प्राप्त कर लें तो वह हित नहीं है। संघ कहता है कि जिस कौम में भगवान ने हमें जन्म दिया है, उसके प्रति हमारा जो कर्तव्य है उसका निर्वहन ही इस कौम का हित है। लेकिन कर्तव्य क्या है? वही कर्तव्य इन सात दिनों में श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बताएगा। बताने के साथ उस शिक्षण को हमारे व्यवहार में ढालने का अभ्यास भी इन सात दिनों में हम करेंगे।

(दीपावली के बाद अनेक स्थानों पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर प्रारंभ हुए जिनके विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।)

स्वामी अड़गड़ानंद जी...

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 14 से 17 अक्टूबर तक तथा 21 से 26 अक्टूबर तक श्री बालाजी आश्रम में स्वामी जी महाराज के सान्निध्य में रहे। संघ के स्वयंसेवकों ने भी इस अवसर का लाभ उठाया एवं अलग अलग क्षेत्रों से आकर स्वामी जी सत्संग से कृतार्थ हुए। 22 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री भी आश्रम पधारे एवं स्वामी जी का सानिध्य प्राप्त किया। इस दौरान अनेक गणमान्य लोगों ने भी संत दर्शन का पुण्य प्राप्त किया।

(पृष्ठ छह का शेष)

छोटे किन्तु...

कार्यक्रम में नारायण सिंह देवल (विधायक रानीवाड़ा), नरपत सिंह चेकला, दलपत सिंह उचमत, देवेंद्र सिंह जाविया, दुर्जन सिंह कलापुरा, देवी सिंह पादर, छैल सिंह उचमत, भगवत सिंह चेकला, मुकन सिंह चेकला सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। बाड़मेर में स्टेशन रोड स्थित मल्लिनाथ छात्रावास में तथा वीर दुर्गादास राजपूत बोर्डिंग हाउस बालोतरा में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में भी जयंती मनाई गई। चौहटन में श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में पूज्य श्री आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। चौहटन प्रान्त के गंगासरा में भी शाखा स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। भीलवाड़ा में कुम्भा विद्या निकेतन स्कूल परिसर में, कोटा में, राजपूत छात्रावास बूंदी में, राजपूत छात्रावास ओसियां में, जालौर के आहोर में तथा भोपालगढ़ प्रान्त के खारिया खंगार में भी आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। मातेश्वरी शाखा भिंयाड द्वारा भी जयंती मनाई गई जिसमें राजेन्द्रसिंह भिंयाड द्वितीय ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व आयुवान सिंह जी के बारे में जानकारी दी। पुणे में तथा कर्नाटक के बैंगलोर में भी चामुंडा माताजी मंदिर, राणासिंहपेट में आयुवानसिंह जी हुडील की जयंती मनाई गई। दिल्ली में नेहरू पार्क की सम्राट अशोक शाखा तथा शास्त्री नगर की नारायण शाखा में जयंती मनाई गई। फरीदाबाद के पल्ला गांव में साप्ताहिक शाखा में भी जयंती मनाई गई जिसमें सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। बांसवाड़ा के गनोड़ा में तथा पाटन प्रान्त की सिद्धराज जयसिंह शाखा में भी जयंती मनाई गई।

पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत की जयंती मनाई

देश के पूर्व उपराष्ट्रपति और तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत की जयंती 23 अक्टूबर को भैरों सिंह जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा बीकानेर के रविन्द्र रंगमंच पर मनाई गई। राजस्थान के लोकतांत्रिक विकास में शेखावत के योगदान के बारे में बताते हुए राजस्थान विधानसभा के उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि राजस्थान की राजनीति में 1952 से लेकर उपराष्ट्रपति बनने तक भैरों सिंह शेखावत में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने सड़क से सदन तक प्रभावी भूमिका निभाई और जनमानस में अपनी गहरी छाप छोड़ी। 1952 में दांतारामगढ़ विधानसभा से चुनाव जीतकर भारत का उपराष्ट्रपति बनने तक की अपनी यात्रा में भैरोंसिंह जी ने न केवल लोकतंत्र को समृद्ध किया बल्कि राजनीतिक शुचिता के नए प्रतिमान स्थापित किए। उन्होंने भैरों सिंह शेखावत के राजनीतिक, सामाजिक जीवन से जुड़े अनुभवों को भी साझा किया। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने भी 'बाबोसा' के नाम से प्रसिद्ध शेखावत के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग बताते हुए उन्हें आधुनिक राजस्थान का भगीरथ बताया। आयोजन समिति के संयोजक भाजपा नेता सुरेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि शेखावत ने सदैव समाज के गरीब एवं वंचित वर्ग के हित के लिए कार्य किया। आज के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को शेखावत के जीवन से प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान 1975 के मीसा बंदियों सहित कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने वालों का सम्मान भी किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

अपने भीतर..

तो हमारे यह दीपावली स्नेहमिलन मनाने की सार्थकता है अन्यथा यह एक औपचारिकता बनकर रह जाएगी। ऐसी औपचारिकता से समाज की आज की स्थिति सुधरेगी नहीं। जब तक हम अपने अंदर की वीणा को झंकृत नहीं करेंगे तब तक समाज की स्थिति सुधरेगी नहीं। जहां तक संगठन की बात है, कोई भी एक संगठन समाज की सभी प्रकार की कमियों और अभावों को दूर कर दे, यह संभव नहीं है। समाज के शैक्षणिक या भौतिक पिछड़ेपन को दूर करने की बात तो ठीक है लेकिन उससे भी आवश्यक है कि जो नैतिक शिक्षा में हम पिछड़े हैं, उसे दूर किया जाए। जब तक नैतिक शिक्षा हमारे जीवन में नहीं आएगी, हमारी वीणा के तार सुस्त पड़े रहेंगे। नैतिक शिक्षा तब संभव होगी जब हमारे अंदर संस्कार निर्मित होंगे। उन संस्कारों को डालने का काम आज समाज की स्थिति को सुधारने के लिए सबसे आवश्यक और सबसे मुश्किल काम है। काम तो और भी बहुत है। शिक्षा के क्षेत्र में, व्यापार नौकरी आदि के क्षेत्र में, राजनीति के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने की आवश्यकता है लेकिन सबसे मुश्किल काम है - संस्कार निर्माण। उपर्युक्त बात माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 26 अक्टूबर को श्री राजपूत सभा जोबनेर द्वारा जोबनेर गढ़ परिसर में आयोजित दीपावली स्नेहमिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमारा इतिहास उज्जवल है लेकिन उस इतिहास को जिन लोगों ने उज्जवल बनाया, क्या उनके जीवन की कुछ बातों को भी अपने आचरण में उतारने का हमने प्रयास किया है? क्या दुर्गा दास जी के त्याग से हमने कोई सीख ली है? क्या हमको मातृभूमि की रक्षार्थ निर्वासन से वापस आकर लड़ने वाले चुंडा याद आते हैं? क्या हमें अपने समाज की, अपने परिवार की वैसी चिंता है? यदि है तो हम आपस में क्यों उलझ रहे हैं? इस उलझन को खत्म करें। जब तक हम खुद अपने आप को सुधारेंगे नहीं तब तक हम दुनिया में दूसरा कुछ श्रेष्ठ काम नहीं कर सकते। जब हम स्वयं को सच्चा क्षत्रिय बनाने की ओर बढ़ेंगे तभी सारा समाज भी हमारी ओर खिंचा चला आएगा। क्षत्रिय कौन? 'क्षतात त्रायते इति क्षत्रिय' अर्थात जो क्षय से बचाए, जो पर पीड़ा निवारण में सहायक हो, जो दूसरे पर आई हुई आफत को अपने ऊपर आई हुई आफत माने, वह सच्चा क्षत्रिय है। क्या हम ऐसा प्रयास कर रहे हैं? आज भी अन्य सभी को यह विश्वास है कि हमारा कोई रक्षक है, तो वह राजपूत है। उस विश्वास को कायम रखने के लिए हमें वैसा ही चरित्र बनाना पड़ेगा और ऐसा ही एक प्रयास श्री क्षत्रिय युवक संघ भी कर रहा है। कार्यक्रम को समता राम जी महाराज, आशु सिंह सुरपुरा, शंकर सिंह भादवा व रावल संग्राम सिंह ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में समाज के मेधावी बालक बालिकाओं को पुरस्कृत भी किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में रामायण का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक श्याम सिंह चिरनोटियां, प्रांत प्रमुख देवेन्द्र सिंह बरवाली, जगदीश सिंह दुजोद आदि सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्रीमती पंकज राठौड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन दीक्षिता राठौड़ ने किया व कार्यक्रम के संयोजक राजेन्द्र सिंह मंढा रहे।

सतिदान सिंह रणधा का निधन

सतिदान सिंह रणधा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **सतिदान सिंह रणधा** का देहावसान 23 अक्टूबर को हो गया। वे संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री गोपाल सिंह रणधा के पुत्र थे और लम्बे समय से अस्वस्थ थे। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 35 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

महिपाल सिंह खोडा के दादीसा और माताजी देहावसान

स्वरूपबा

नयनाबा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक महिपाल सिंह खोडा के **माताजी नयनाबा** हरपाल सिंह वाघेला का निधन 23 अक्टूबर को 53 वर्ष की आयु में हो गया। इससे नौ दिन पूर्व महिपाल सिंह के **दादीसा स्वरूपबा** बलवंतसिंह वाघेला का देहावसान भी 15 अक्टूबर को 87 वर्ष की आयु में हुआ। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्माओं की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए परिजनों की इस दोहरी क्षति के प्रति संवेदना प्रकट करता है।

संस्कार निर्माण लंबी चलने वाली प्रक्रिया है: सरवड़ी

सरवड़ी ने त्रिलोकपुरा (सीकर) में 15 अक्टूबर को आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संस्कार निर्माण का यह कठिन कार्य भी हम सभी के सामूहिक प्रयासों से द्रुतगामी बन सकता है। इसीलिए संघ संस्कार निर्माण के साथ समाज को संगठित भी कर रहा है। संगठित समाज ही अपने सामने मौजूद चुनौतियों से लड़कर उन्हें हरा सकता है। एडवोकेट महावीर सिंह त्रिलोकपुरा के आवास पर आयोजित इस कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बैण्यांकाबास, लक्ष्मण सिंह मोहनवाड़ी, शेर सिंह बिडोली, शिवलाल सिंह राजपुरा, सेवानिवृत अतिरिक्त जिला कलक्टर ईश्वर सिंह अर्जुनपुरा, बाबूसिंह बाजोर, राम सिंह पिपराली, पूर्व सरपंच भवानी सिंह त्रिलोकपुरा, भागीरथ सिंह सेरूणा, भंवर सिंह नाथावतपुरा, घिसू सिंह कासली सहित आसपास के गांवों के समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सुरेन्द्र सिंह तंवरा ने किया। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया।

उदयपुर में श्री प्रताप फाउंडेशन की बैठक सम्पन्न

श्री प्रताप फाउंडेशन की एक दिवसीय चिंतन बैठक बीएन कॉलेज के कुम्भा सभागार में 16 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्य और कार्यप्रणाली पर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि सामाजिक हितों के संरक्षण के लिए समाज की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाना आवश्यक है। साथ ही वर्तमान राजनीति में बढ़ते जातिवाद और जातीय वैमनस्य से समाजों पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव के प्रति जागरूक होने और इसे रोकने की भी अत्यधिक आवश्यकता है। सभी समाजों में सौहार्द और समरसता के निर्माण के लिए निरंतर आपसी संवाद आवश्यक है। श्री प्रताप फाउंडेशन इन सभी दिशाओं में कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के सशक्तिकरण में अपनी भूमिका निभाना हम सभी का नैतिक दायित्व है। इस दायित्व को निभाने के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी शत प्रतिशत मतदान का लक्ष्य पूरा करने में सहयोगी बनें। जागरूक मतदाता के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन करने के लिए अपने परिवार के सभी सदस्यों का नाम मतदाता सूची में अवश्य जुड़वाएं। बैठक के दौरान फाउंडेशन द्वारा जिले में किए जाने वाले कार्यों के लिए योजना भी बनाई गई। जिले में 18 दिसंबर को किसान सम्मेलन के आयोजन का भी निर्णय हुआ जिसमें मेवाड़ के किसानों की समस्याओं के समाधान की बात के साथ ही सभी समाजों के आपसी सौहार्द को बढ़ाने के लिए भी संवाद किया जाएगा। इस दौरान गुणवंत सिंह झाला (पूर्व देहांत जिला अध्यक्ष भाजपा), लाल सिंह झाला (देहात अध्यक्ष कांग्रेस), प्रेम सिंह मदारा (जिला उपाध्यक्ष भाजपा), गोपाल सिंह चौहान कोटड़ी कुलदीप सिंह साकरिया खेड़ी, मदन सिंह बंबोरा, कुलदीप सिंह छात्रसंघ अध्यक्ष, मनोहर सिंह भीम का खेड़ा, कुंदन सिंह कछेर, अभिमन्यु सिंह गोगुंदा, बृजराज सिंह खारड़ा, भंवर सिंह बेमला, मान सिंह महासिंह जी का खेड़ा, दलपत सिंह गुड़ा केसर सिंह, भानुप्रताप सिंह झीलवाड़ा, मोहन सिंह बंबोरा, देवेंद्र नाथ सिंह फलीचड़ा, नवलसिंह चुंडावत सहित अनेकों जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता व समाजबंधु उपस्थित रहे।

खींवसर में राजपूत समाज का दीपावली स्नेहमिलन संपन्न

खींवसर स्थित वीर दुगार्दास राठौड़ राजपूत छात्रावास में 26 अक्टूबर को राजपूत समाज का दीपावली स्नेह मिलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम में समाज के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने, आपसी एकता को मजबूत करने, सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने जैसे अनेक विषयों पर चिंतन हुआ व चर्चा की गई। नागौर जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष धनंजय सिंह खींवसर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समाज की बालिकाओं को अधिकाधिक शिक्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि एक बालिका के शिक्षित होने से तीन पीढ़ियों के शिक्षित होने का मार्ग खुलता है। आज का जमाना तलवार का नहीं कलम का है। लोकतंत्र में सिर कटवाने से अधिक सिर दिलवाने की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं से सभी तरह के नशे से दूर रहने का आह्वान किया और कहा कि नागौर जिले में एक भी राजपूत विधायक का ना होना सामाजिक एकता की कमी का परिचायक है। संगठित होकर ही हम राजनीति में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकते हैं। न्यायिक मजिस्ट्रेट कृष्ण सिंह ईसारनावाड़ा ने कहा कि युवा समाज की नींव है। युवाओं को अपना लक्ष्य निश्चित करके उसको प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने पर कोई भी सफलता असंभव नहीं है। सैनिक कल्याण बहुउद्देशीय सहकारी समिति के पूर्व जिला अध्यक्ष हरि सिंह जोधा ने कहा कि नशे की प्रवृत्ति और मृत्यु भोज जैसी कुप्रथाओं से समाज में पिछड़ापन बढ़ता है। इसे रोकने के लिए समाज की युवा पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण करना आवश्यक है। भाजपा के प्रदेश मंत्री वीरमदेव सिंह जैसास ने कहा कि संगठित समाज ही आज की व्यवस्था में अपने अधिकार प्राप्त कर सकता है। हमें समाज को संगठित करने के साथ ही अन्य समाजों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों को बनाए रखने के लिए भी प्रयास करना होगा। कार्यक्रम को त्रिभुवन सिंह भाटी, गोटन के पूर्व सरपंच नारायण सिंह, सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जयसिंह पालड़ी, धारां सरपंच भवानी सिंह सहित अनेक वक्ताओं ने संबोधित किया। सभी ने समाज के हित में मिलकर कार्य करने और एक रहने की बात कही। लाल सिंह चावंडिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के आसपास के क्षेत्र के गणमान्य समाजबंधु व जनप्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

जोधपुर किसान सम्मेलन का पोस्टर विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न

श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में आगामी 13 नवंबर को जोधपुर के श्री हनवंत राजपूत छात्रावास में आयोजित होने वाले किसान सम्मेलन का पोस्टर विमोचन मारवाड़ राजपूत सभा भवन में 15 अक्टूबर को किसान प्रतिनिधियों व संगठनों की उपस्थिति में किया गया। सभी ने किसानों की समस्याओं का समाधान ढूंढने तथा आपसी सौहार्द हेतु संवाद बढ़ाने की इस पहल की सराहना करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण मनोयोग से तैयारी करने की बात कही। इसके लिए पूरे जिले में तहसील वार सर्व समाज की बैठकें आयोजित करने का भी निर्णय हुआ। इस दौरान पूर्व सांसद डॉ. नारायण सिंह माणकलाव, राज्य बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष शंभू सिंह खेतासर, हनुमान सिंह खांगटा, पूर्व विधायक भैराराम सियोल, पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़, कृषि मंडी के अध्यक्ष जगराम विश्नोई, पार्षद भंवर कंवर, पार्षद भीमराज राखेचा, राम सिंह रोहिणा, के वी सिंह चांदरख, गोपाल सिंह भलासरिया, सुरेश सरगरा, ओम प्रकाश तापू, आदर्श जाट महासभा के अध्यक्ष प्रकाश बेनीवाल, भवानी सिंह बारां, विक्रमादित्य सिंह आमला, चंद्रवीर सिंह भालू, जितेंद्र सिंह बड़ला, घेवर चंद सारस्वत सहित सर्वसमाज के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org